सम–शम–श्रम

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति सम–शम और श्रम की संस्कृति है। सम का अर्थ है समभाव। लाभ–हानि, जीवन–मरण, सुख–दुःख, सम्मान–तिरष्कार में एक समान रहना समता की स्थिति है। सामान्यतः मनुष्य सुख में बहुत प्रसन्न हो जाता है और दुःख में बहुत दुःखी हो जाता है। दोनों परिस्थितियों में समान रहकर धर्म का पालन करना चाहिए। गीता में निष्काम कर्म का उपदेश समभाव में रहने के लिए ही दिया गया है। मनुष्य को सभी परिस्थितयों में सम रहना चाहिए। कभी–कभी परिणाम अनुकूल रहने पर प्रसन्नता और परिणाम विपरीत रहने पर तनाव हो जाता है। इन दोनों स्थितियों से मुक्त रहने के लिए गीता में समभाव का उपदेश दिया गया है।संयोग के साथ वियोग जुड़ा हुआ रहता है। यह श्रृंखला जीवनभर चलती रहती है। समभाव में स्थित रहना प्रज्ञाचक्षु की स्थिति है। करीबरदासजी ने कहा है–

दुःख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, दुःख काहै को होय।।

अर्थात् दुःख के समय सभी लोग भगवान को याद करते हैं। सुख में कोई भी उन्हें याद नहीं करता। यदि सुख में ईश्वर का स्मरण हो तो किसी को दुःख प्राप्त न हो। सुख–दुःख जीवन में आने वाले पड़ाव हैं। ये दोनों चलते रहते हैं। इन दोनों स्थितियों में जो धर्म के मार्ग पर चलता है वही विजयी होता है।

शम का अर्थ है– शमन करना। प्रश्न होता है किसका शमन? भीतरी शत्रुओं का शमन करना चाहिए। काम, क्रोध, मद, लोभ मानव के आंतरिक शत्रु हैं। इन्हें कषाय कहते हैं। इनके शमन से मन में शान्ति प्राप्त होती है। क्रोध को क्षमा से जीतना चाहिए। क्षमा को देखकर क्रोध शान्त हो जायेगा। अहंकार को मृदुता से जीतो। मृदुता, विनम्रता से अहंकार दूर हो जायेगा। सामने वाला यदि आपको गाली दे रहा है तो वहां से दूर हटकर विनयशीलता का परिचय

देना चाहिए। इससे टकराव की स्थिति शान्त हो जाएगी। जितना अधिक शमन करने की शक्ति मनुष्य में रहती है वह उतना ही अधिक शक्तिशाली होता है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में इसी अस्त्र का प्रयोग किया था। उन्होंने अपने को तथा अपने अनुयाइयों को अपने अन्दर की क्रोधाग्नि को शमन करने का ही उपदेश दिया। वे जानते थे कि यदि हम शान्तिपूर्वक अहिंसा के मार्ग पर चलेंगे तो निश्चित ही एक दिन हमारी विजय होगी।

श्रम का अर्थ है– परिश्रम। शारीरिक, मानसिक परिश्रम मनुष्य को स्वस्थ बनाता है। श्रम पुरुषार्थ कहलाता है। पुरुषार्थ करने से जीवन में मनुष्य को सब कुछ प्राप्त हो सकता है। जो भारत पहले जब अंग्रेजों के अधीन था तब यहां पर खाद्य सामग्री की बहुत कमी हुआ करती थी। लेकिन हमारे देश के श्रमिकों ने अपने श्रम से भारत माता को शस्य श्यामला बनाकर प्रभूत मात्रा में अन्न पैदा किया। इसका परिणाम यह हुआ कि हम दूसरे देशों को भी अन्न निर्यात करने लगे। श्रम से शरीर शक्तिशाली, सुगठित और निरोग बनता है। जो व्यक्ति अपने श्रम से, अपने परिश्रम से अपने परिवार का भरण–पोषण करता है उसका परिवार फलता फूलता है।

सम–शम और श्रम को सत्यं शिवं सुन्दरम् के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। **सत्यमेव जयते** के साथ–साथ **श्रममेव जयते** का उदघोष आधुनिक युग की मांग है। ईश्वर को सत्य कहा गया है। सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है। सत्य के सिवा इस संसार में जितनी भी वस्तुएं है सब औपाधिक है। यह संपूर्ण सृष्टि ईश्वर के द्वार रचित है। इसमे सत्य और श्रम समाया हुआ है। अपने–अपने कर्मों के अनुसार सभी प्राणी इस संसार में जन्म लेते है और कर्मों का भोगकर यथास्थान चले जाते है। इसलिए मानव को सत्कर्म ही करना चाहिए। श्रम करने से यह लोक तो सुधरता है और सत्कर्म करने से परलोक सुधर जाता है।

महापुरुषों का जीवन सत्य और श्रम से अनुप्राणित है। महात्मा गांधी ने अपने जीवन में सत्य अहिंसा का पालन किया। सत्य और अहिंसा के द्वारा उन्होंने देश को आजाद करा दिया। सत्यं शिवं सुन्दरम् और सम–शम और श्रम जब व्यवस्था में आ जाता है तो राम राज्य का अवतरण होता है। राम राज्य का मतलब है जहां पर किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार का

कष्ट न रहे। सभी समता मूलक जीवन जिये। जीवन में सत्यं शिवं और सुन्दरम् लाने के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय की कल्पना की गई है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार पुरुषार्थ हैं। धर्म के द्वारा सत्कर्मों का अर्जन किया जाता है। अर्थ के द्वारा जीवन सुचारु रूप से चलाया जाता है। काम के द्वारा मन को संतुष्ट कर इच्छाओं की पूर्ति की जाती है। मोक्ष जीवन का अंतिम पुरुषार्थ है। प्रत्येक प्राणी चाहे वे सदाचारी हो या दुराचारी उसकी इच्छा यही रहती है कि हमें मोक्ष प्राप्त हो। किन्तु जो सत्कर्म करता है, जो सत्यं शिवं सुन्दरम् का पालन करता है वही मोक्ष को प्राप्त करता है। सत्य और श्रम जीवन का सार है। यह जीवन के लिए अमृत तुल्य है। मानव जीवन में सम–शम और श्रम इन तीनों का बराबर महत्त्व है।